International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 11 No. 6 July-Aug 2024

जनपद गाजीपुर मे शस्य प्रतिरूप का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

पंकज कुमार मिश्र[1] डॉ चंद्रभूषण सिंह[2]

[1]शोध छात्र वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय आरा (बिहार)

[2]शोध- निर्देशक प्रोफेसर, भूगोलविभाग, ग्राम भारती महाविद्यालय रामगढ़, कैमूर, बिहार

Corresponding Author: पंकज कुमार मिश्र

DOI- 10.5281/zenodo.13195176

सारांश:

भारत एक कृषि प्रधान देश है यहां की लगभग 70% जनसंख्या कृषि पर आधारित है कृषि प्रधान देश होते हुए भी भारत में प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता अन्य प्रगतिशील देश की तुलना में कम है। इसके साथ ही साथ घनी आबादी वाले देश होने के कारण भारत में खाद्य समस्या की विकट समस्या विद्यमान है आज भी देश को अनाज विदेश से आयात करना पड़ता है इन समस्याओं के समापन के लिए हरित क्रांति एक उपयोगी एवं आवश्यक उपाय सिद्ध हो सकता है।

सदियों से भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान होने के बाद भी,आज देश दहशत के मुहाने पर खड़ा है। अब हम आयात पर निर्भर न रहते हुए अपने यहां प्रचुर मात्रा में अन्न उपजाते हैं वर्ष 2004 तक हम खाद्यान्नों का निर्यात करते थे। किंतु सन 2005 में सरकार को लगा कि घरेलू भूख शांति करने के लिए कृषि उत्पादन में सुधार लाना होगा और उसने निर्यात को रोकने के लिए स्टीयरिंग व्हील को उल्टी दिशा में कुछ ज्यादा ही घूमा दिया। अब हम गेहूं दालों और खाद्य तेलों को आयातक बनते जा रहे है।

शस्य स्वरूप का क्षेत्रीय विश्लेषण-

अध्ययन क्षेत्र मे तीन प्रकार की फसलों का उत्पादन किया जाता है यह विभाजन ऋतुओं के आधार पर किया जाता है।

रबी की फसल-

अरबी भाषा में रबी का अर्थ बसंत होता है शीतु ऋतु में उगाई जाने वाली तथा बसंत ऋतु में काटी जाने वाली फैसले रबी फसल कहलाती है। जैसे गेहूं जौ, चना आदि इन फसलों के बीजों के अंकुरण तथा परिपक्वता के लिए गर्म जलवायु जबकि विकास के लिए ठंडे वातावरण की आवश्यकता होती है। इन्हें अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती।

जनपद में कुल 222620 हेक्टेयर क्षेत्र में रवि की फसल की कृषि की जाती है जिसमें 221428 हेक्टेयर क्षेत्र ग्रामीण एवं 1192 हेक्टेयर क्षेत्र नगरी हैं। अध्ययन क्षेत्र के कासिमाबाद विकासखंड 18909 हेक्टेयर में सर्वाधिक जबकि सबसे कम करंडा 5079 हेक्टेयर विकासखंड में रबी की फसल की कृषि की जाती है।

खरीफ की फसल-

खरीफ की फसलजिन्हें मानसूनी फसल या शरद ऋतु की फसल के रूप में भी जाना जाता है।इस फसलकी कृषि एवं कटाई मानसून की ऋतु में की जाती है। खरीफ की फसलकी पर्याप्त वृद्धि के लिए अत्यधिक जल की आवश्यकता होती है। खरीफ की फसल के लिए गर्म जलवायु की आवश्यकता होती है। जैसे चावल कपास मक्का आदि।

जायद की फसल-

जायद अथवा शीत ऋतु की फैसले खरीफ और रबी फसलों के बीच मार्च एवं जुलाई के मध्य अल्पकालिक मौसम में उगाई जाती है। ये फसले अधिकांशतः तथा सिंचित भूमि पर उगाई जाती हैं। अतः किसान मानसूनी की प्रतिक्षा नहीं करते हैं। जायद की फसलों को उगाने के लिए गर्म मृदा एवं उच्च तापमान की आवश्यकता होती है। अधिकांश सब्जियां एवं संकर अनाज जायद के मौसम में उगाए जाते हैं। जैसे- तरबूज, खरबूजा, गन्ना, खीरा, कद्दू, करेला, मूंगफली तथा ढाले आदि।

फसलों का उत्पादन-

अध्ययन क्षेत्र जनपद गाजीपुर कृषि प्रधान क्षेत्र है। इस क्षेत्र में रवि खरीफ तथा जायद की फसल विभिन्न वस्तुओं में उगाई जाती हैं। इनमें चावल मक्का गेहूं जौ चना तिलहन, खीरा, कद्दू, करेला, तरबूज, खरबूज, गन्ना तथा दालें आदि प्रमुख हैं।

चावल-

खरीफ की प्रमुख फसल है अध्ययन क्षेत्र में गेहूं की कृषि के पश्चात धान की कृषि का क्षेत्रफल सर्वाधिक पाया जाता है क्योंकि गंगा गोमती तथा अन्य सहायक नदियों एवं उनसे निकल गई नहरों से पर्याप्त मात्रा में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है जनपद में गंगा एवं उसके सहायक नदियों द्वारा लाई गई मिट्टियों में जल धारण करने की क्षमता अधिक है जिससे उन मिट्टी में पर्याप्त मात्रा में नमी बनी रहती है जो धान की फसल के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती हैं अध्ययन क्षेत्र में जनपद गाजीपुर में वर्ष 2018-19 में कुछ 400087 मीट्रिक टन चावल का उत्पादन हुआ वर्ष 2019-20 में जनपद में चावल के उत्पादन में कमी आई इस वर्ष उत्पादन 38 2273 मीट्रिक टन रहा जो पूर्व के वर्षों से कम रहा कारण वर्ष में कमी थी

वर्ष 2020-2021 में इस उत्पादन में 467290 मीट्रिक टन चावल का उत्पादन हुआ जो पिछले वर्षों से अधिक था।

गाजीपुर जनपद में फसलों का उत्पादन (मी० टन में)

क्रमांक	फसल का नाम	वर्ष-2018-19	वर्ष-2019-20	वर्ष-2020-21
1	**कुल चावल**	400087	382273	467290
2	**कुल मक्का**	1659	669	1099
3	**गेहूँ**	560973	636359	638291
4	**जौ**	17397	15615	3777
5	**कुल दालें**	33313	33565	31372
6	**कुल तिलहन**	317	296	453
7	**गन्ना**	446488	425741	435213
8	**आलू**	342393	166523	290736
9	**ज्वार**	6434	3090	7245
10	**बाजरा**	28360	19525	24054

गेहूं-

रबी की प्रमुख फसल है अध्ययन क्षेत्र में गेहूं की कृषि सर्वाधिक की जाती है अध्ययन क्षेत्र में इस फसल की कृषि प्राचीन काल से की जा रही है वर्ष 2018-2019 में गेहूं का उत्पादन 560973 मीट्रिक टन रहा जो वर्ष2019-20 में 6363 59 मीट्रिक टन तथा वर्ष 2020-21 में 6382 91 मीट्रिक टन हो गया आंकड़ों से स्पष्ट है कि गेहूं उत्पादन में अध्ययन क्षेत्र निरंतर वृद्धि कर रहा है इसका प्रमुख कारण उपजाऊ मृदा एवं उपयुक्त जलवायु का होना है।

गन्ना- अध्ययन क्षेत्र के संपूर्ण कृषि योग्य भूमि के बड़े विभाग पर गन्ने की कृषि की जाती है गन्ना जनपद की एक प्रमुख नगदी तथा मुद्रा दायिनी फसल है जिसकी कृषि गंगा जमुना के दोआब क्षेत्र तथा नदियों के तराई क्षेत्र में की जाती है वर्ष 2018-19 जनपद में कुल 446488 मीट्रिक टन वर्ष 2019-20 में 425741 तथा वर्ष 2020-21 में 435213 मीट्रिक टन गन्ने का उत्पादन हुआ।

दलहन-

दलहन अध्ययन क्षेत्र की प्रमुख फसल है अध्ययन क्षेत्र में इस फसल के लिए उत्तम जलवायु तथा ढाल युक्त उपजाऊ मृदा उपयुक्त मानी जाती है जनपद में दलहन के अंतर्गत सभी दलहनी फसलों को शामिल किया गया है वर्ष 2018-19 में जनपद में कुल 33315 मीट्रिक टन वर्ष 2019-20 में 33565 मीट्रिक टन तथा वर्ष 2020-21 में 31372 मीट्रिक टन दलहनी फसलों का उत्पादन हुआ।

बाजरा-

बाजरा भी मक्के की तरह खरीफ की प्रमुख फसल है जिसको अधिक ताप एवं जल की आवश्यकता पड़ती है बाजरा अध्ययन क्षेत्र का मुख्य फसल है तथा उत्पादन की

दृष्टि से इस फसल का महत्वपूर्ण स्थान है जो अध्ययन क्षेत्र के खादर क्षेत्र में बोई गई। जो वर्ष 2018-19 में 28360 मीट्रिक टन वर्ष 2019-20 में 19525 मीट्रिक टन तथा वर्ष 2020-21 में 24054 मीट्रिक टन उत्पादन हुआ।

संदर्भ:

1. कुरुक्षेत्र: (डॉo सुधीश कुमार पटेल) "लेखक चंचलबाई पटेल महाविद्यालय, राइट टाउन जबलपुर के वाणिज्य विभाग में कार्यरत् है।"
2. भारत 2002, पृo-424
3. Fourth Five Year Plan, 1969-74m PP. 113-116.
4. Husain, M., 1979, Agricultural Geography, New Delhi, Inter India Publicatios.
5. कुरुक्षेत्र : भरत कुमार दुबे (जुलाई 2018)
6. कुरुक्षेत्र : डॉ. अरविन्द (जुलाई 2019)
7. कुरुक्षेत्र : अखिलेश आर्देन्दु
8. भारतीय कृषि अर्थशास्त्र- डॉo एनoएलo अग्रवाल